Self Respect

11-08-2014

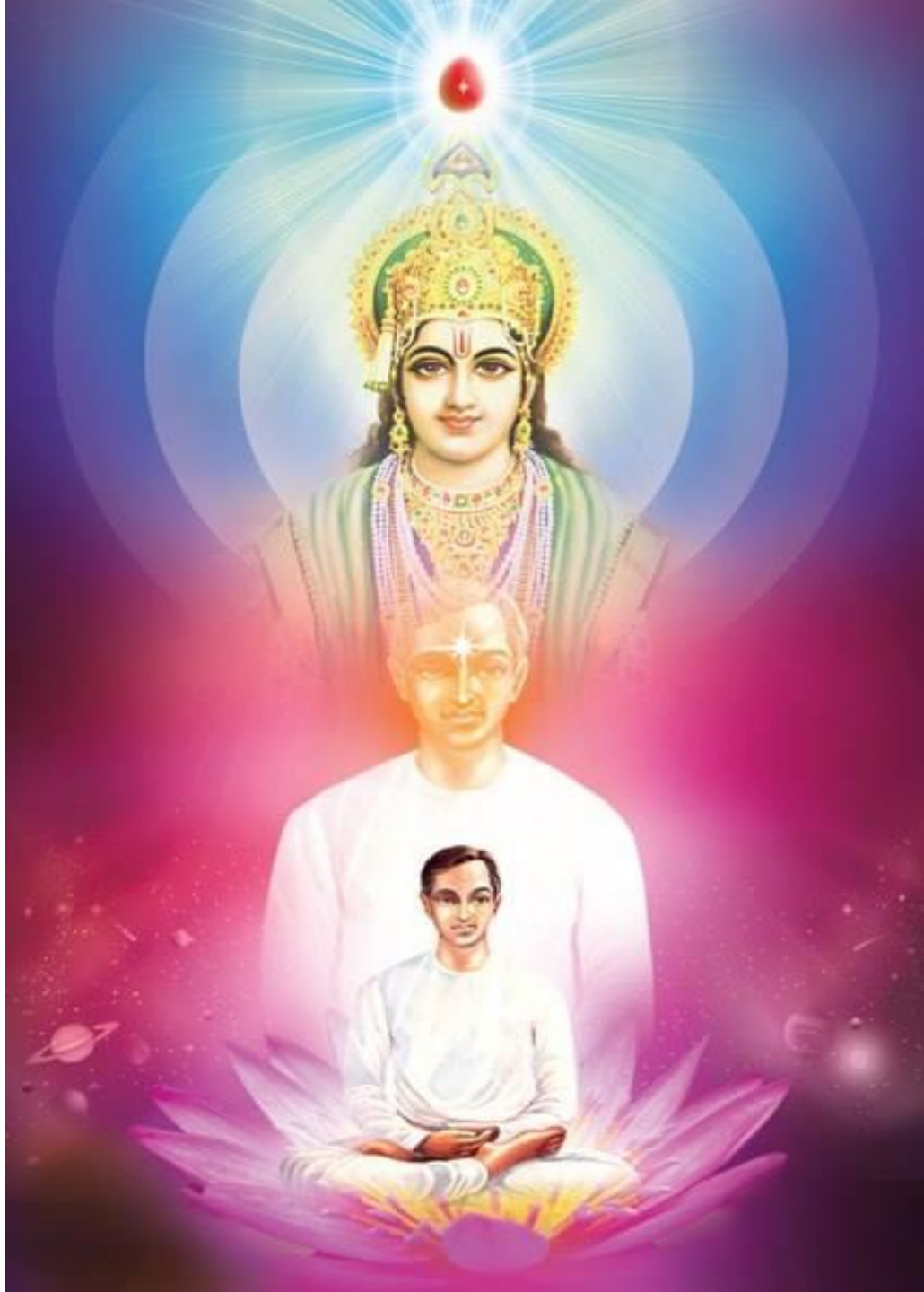

- ✓मनुष्य से देवता बनने की यह है नई नॉलेज अथवा पढ़ाई । यह तुमको कौन पढ़ाते हैं? बच्चे जानते हैं रूहानी बाप हम बच्चों को ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं । यह भूलना नहीं चाहिए । वह बाप है फिर पढ़ाते हैं तो टीचर भी हो गया । यह भी तुम जानते हो हम पढ़ते ही हैं नई दुनिया के लिए ।

- ✓बच्चों को यह निश्चय है कि नई दुनिया में रहते ही हैं दैवी गुण वाले देवतायें । तो अब हमको भी गृहस्थ व्यवहार में रहते दैवी गुण धारण करने हैं । पहले-पहले काम पर जीत पाकर निर्विकारी बनना है । कल इन देवी-देवताओं के आगे जाकर कहते भी थे कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, हम विकारी हैं । अपने को विकारी फील करते थे क्योंकि विकार में जाते थे । अब बाप कहते हैं तुमको भी ऐसे निर्विकारी बनना है ।

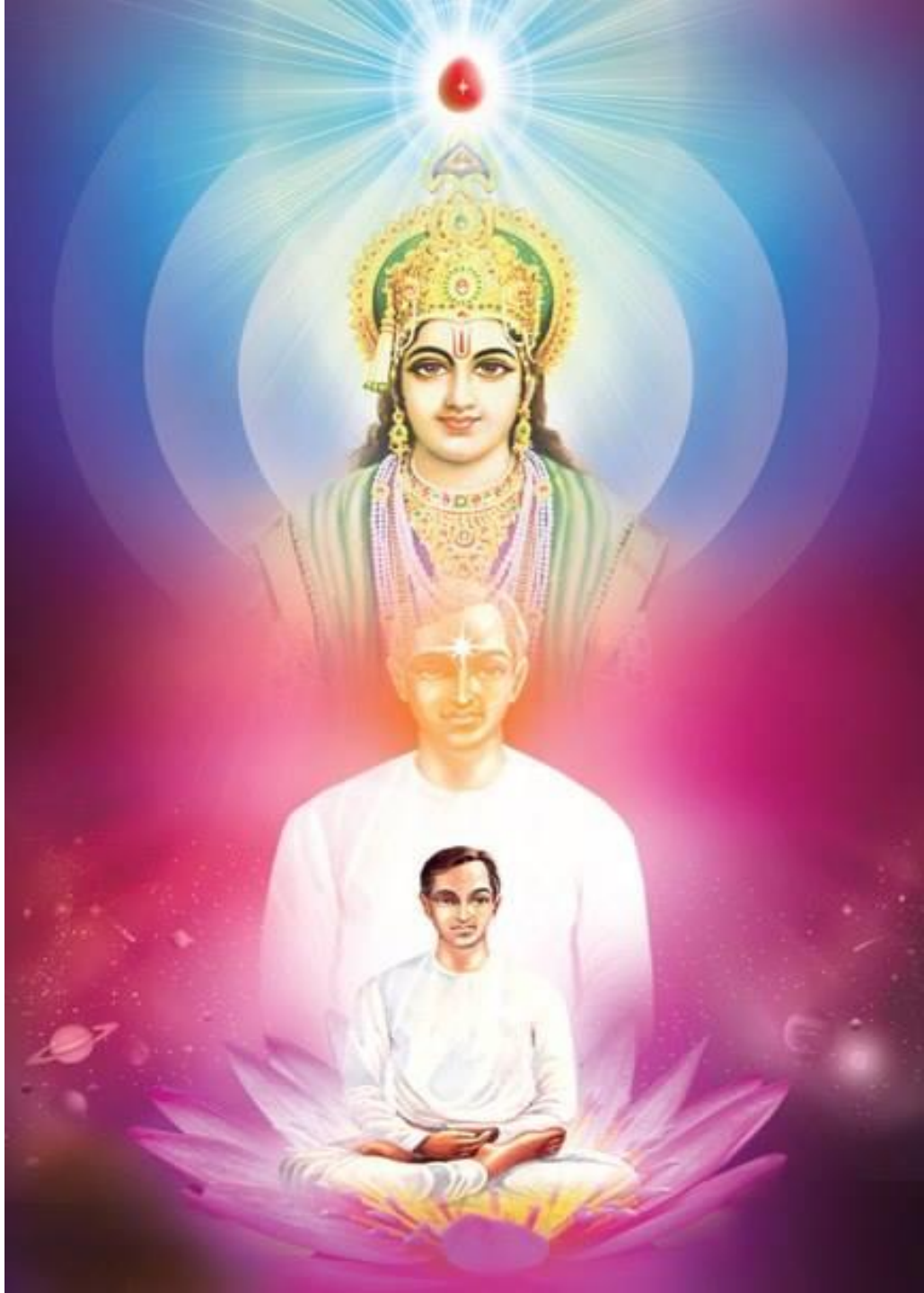

- ✓तुम कहेंगे विकर्माजीत का संवत एक वर्ष से शुरू होता है फिर 2500 वर्ष बाद विक्रम संवत शुरू होता है । अभी विक्रम संवत पूरा होगा फिर तुम विकर्माजीत महाराजा-महारानी बन रहे हो, जब बन जायेंगे तो विकर्माजीत संवत शुरू हो जायेगा । यह सब तुम ही जानते हो ।

- ✓हम तो शिवबाबा से पढ़ते हैं । यह भी उनसे पढ़ता है । पढ़ाने वाला तो ज्ञान का सागर है, वह है विचित्र, उनको चित्र अर्थात् शरीर होता नहीं । उनको कहा ही जाता है निराकार ।

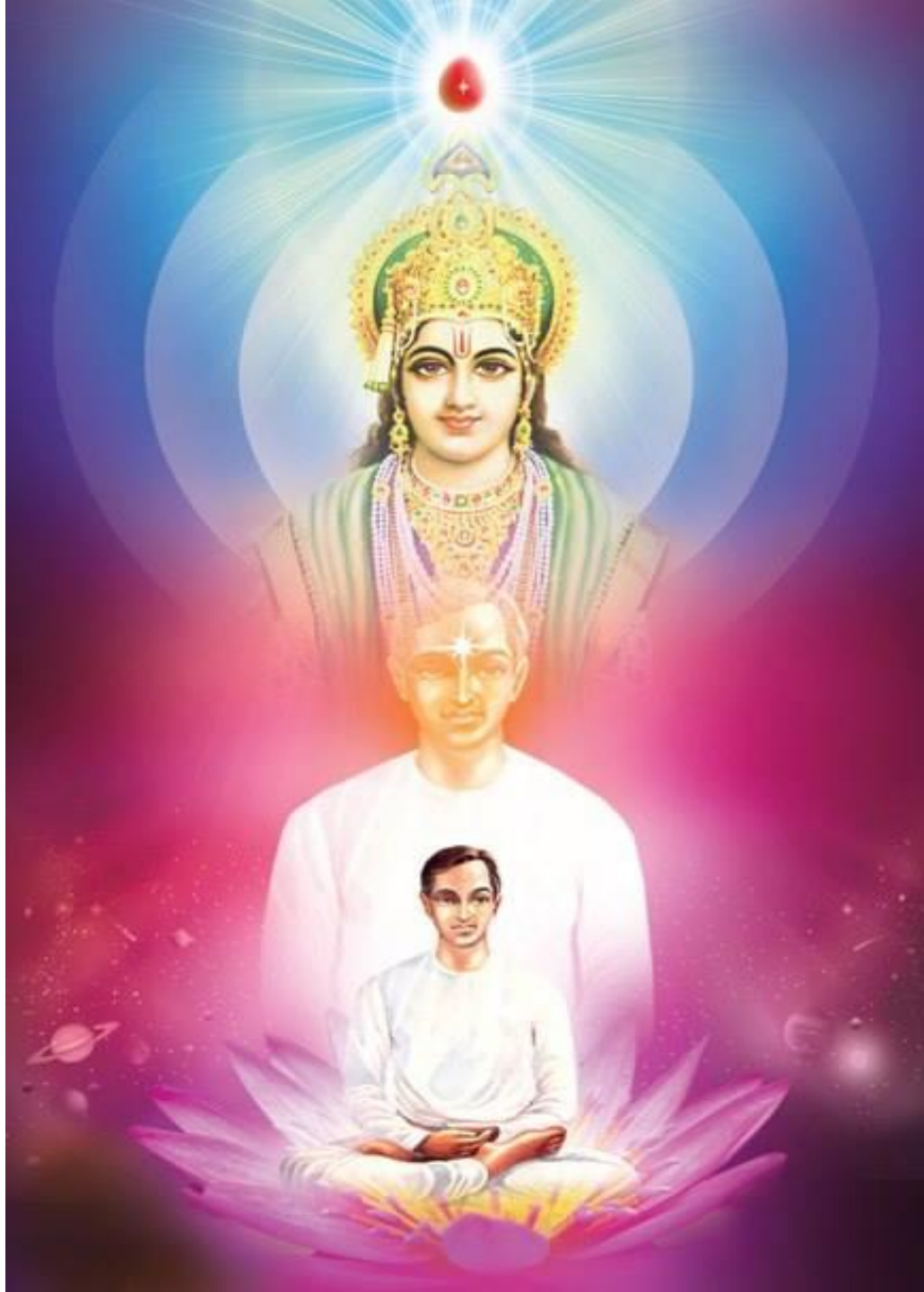

- ✓तुम सब टीचर्स हो, टीचर की औलाद हो ना तो तुमको भी टीचर ही बनना है । तो कितने टीचर्स चाहिए पढ़ाने लिए? जैसे बाप, टीचर, सतगुरू है, वैसे तुम भी टीचर हो । सतगुरू के बच्चे सतगुरू हो । वह कोई सतगुरू नहीं है । वह गुरू के बच्चे गुरू ।

- ✓अभी तुम हो पुरूषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण । तुम उत्तम पुरूष बनते हो । कनिष्ट पुरूष उत्तम के आगे माँथा टेकते हैं । देवताओं के मन्दिर में जाकर कितनी महिमा गाते हैं । अभी तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं । यह तो बहुत सिम्पुल बात है । विराट रूप के बारे में भी बतलाया है । विराट चक्र है ना । वह तो सिर्फ गाते हैं ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय ।

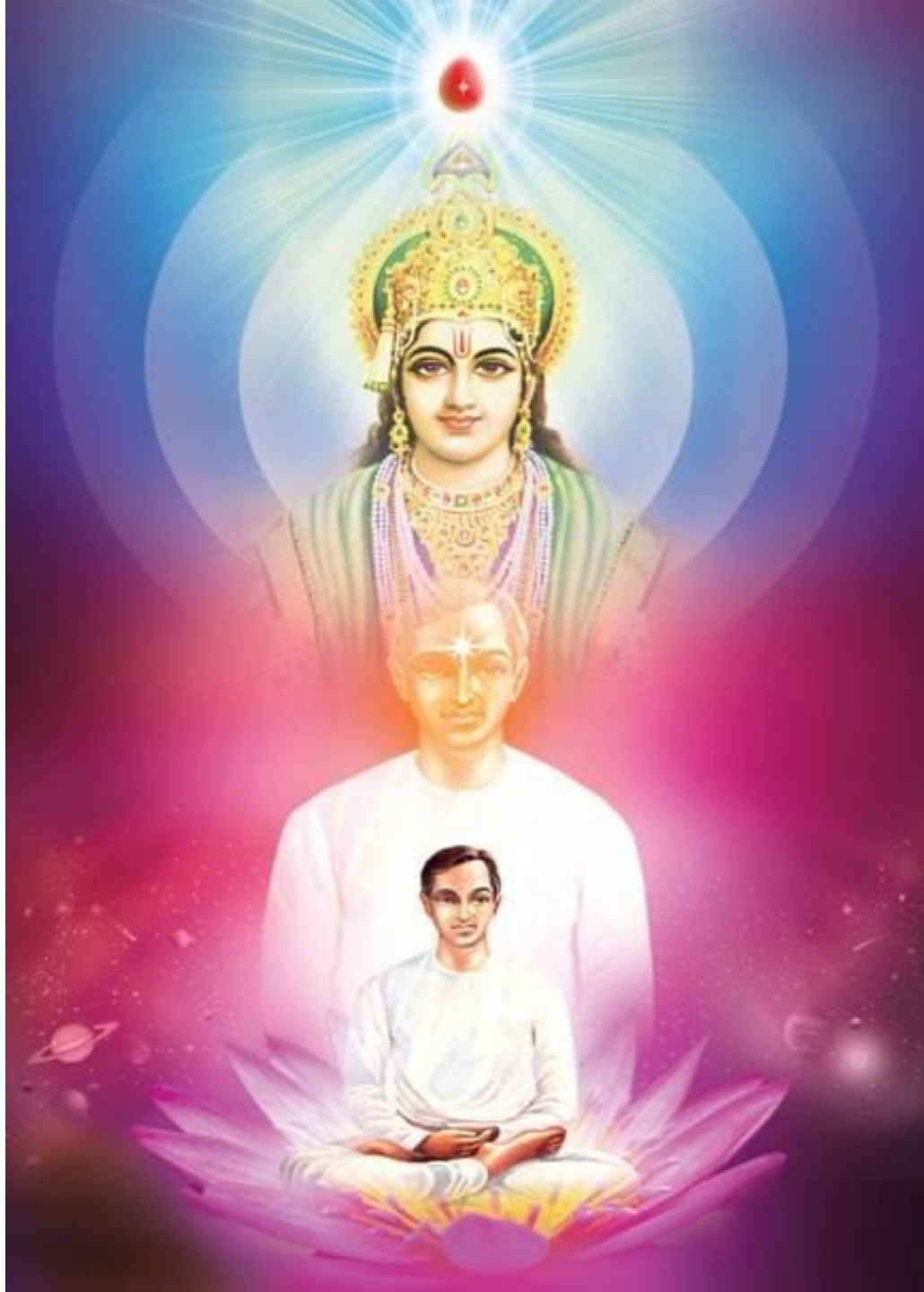

- ✓बाप आकर सबको करेक्ट करते हैं । तुमको भी करेक्ट कर रहे हैं क्योंकि भक्ति मार्ग में जन्म-जन्मान्तर तुम जो कुछ करते आये हो वह है रांग इसलिए तुम तमोप्रधान बने हो ।
- ✓बेहद का बाप जरूर बेहद का वर्सा देते हैं । 5 हजार वर्ष पहले तुम स्वर्गवासी थे, अब नर्कवासी हो ।
- ✓अभी तुम्हारी बुद्धि में आदि से अन्त तक सारी नॉलेज है । रचयिता बाप अब प्रैक्टिकल में है, जिसकी फिर भक्ति मार्ग में कहानी बनेगी । अभी तुम भी प्रैक्टिकल में हो । आधाकल्प तुम राज्य करेंगे फिर बाद में कहानी हो जायेगी । चित्र तो रहते हैं ।

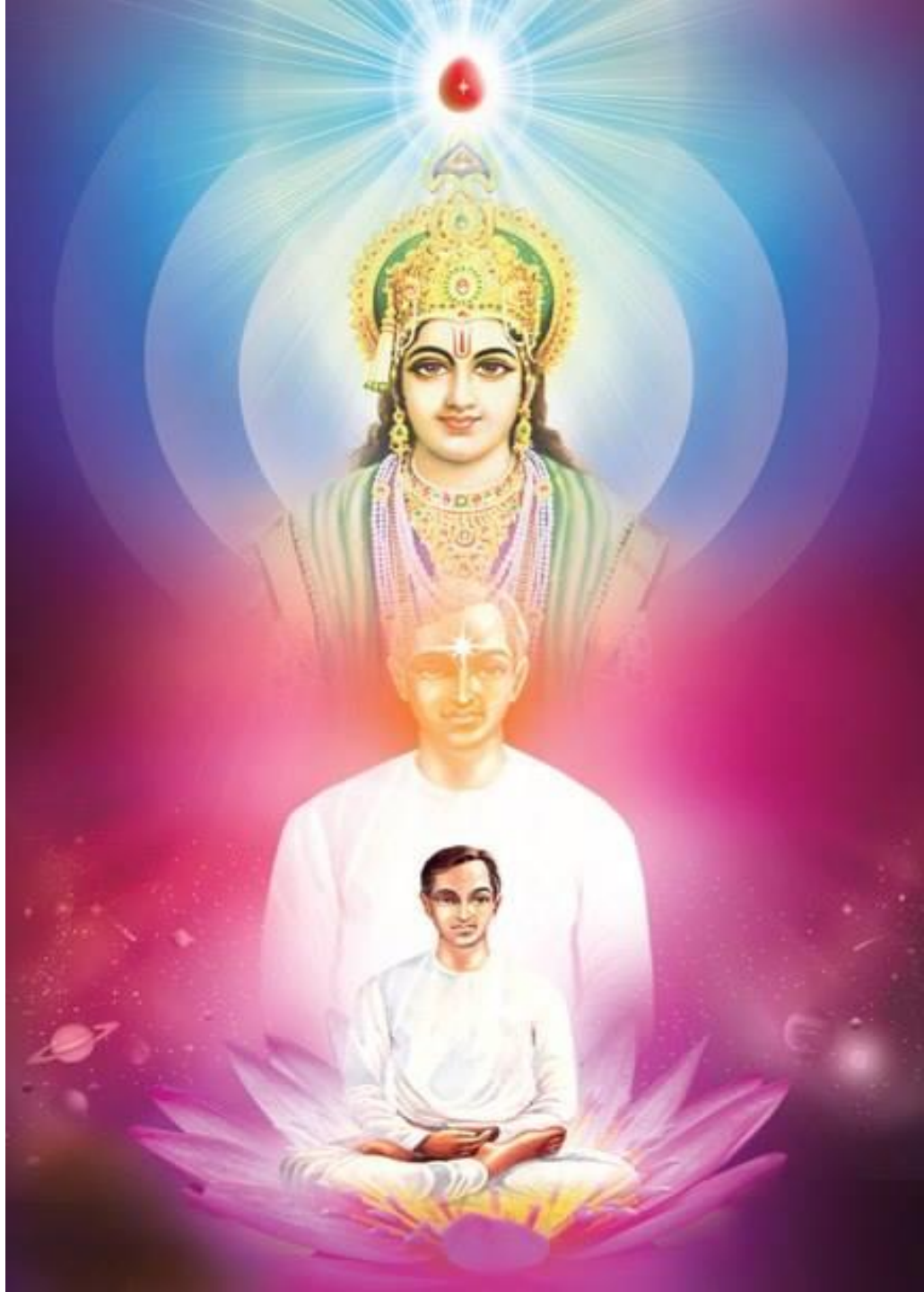

- ✓सन्यासी हैं निवृत्ति मार्ग वाले, तुम हो पवित्र गृहस्थ आश्रम वाले । फिर अपवित्र गृहस्थ आश्रम में जाना है । स्वर्ग के सुखों को कोई जानता नहीं ।

- ✓वरदान: ईश्वरीय संग में रह उल्टे संग के वार से बचने वाले सदा के सतसंगी भव !

- ✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |